12

गोड़ावण

अरे, आप मेरी 'हूम्...हूम...आवाज़ सुनकर चौंको मत! मैं गोड़ावण हूँ। धोरों की धरती का प्यारा पक्षी गोड़ावण!

मित्रो! मैं अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनना चाहता हूँ पर लोग मुझे सुंदर पक्षी मानते हैं। वे मुझे सोहन चिड़िया कहकर पुकारते हैं। कुछ लोग मुझे हूकना पक्षी कहते हैं। मुझे मराठी भाषा में मालढोक कहा जाता है।

मैं लगभग एक मीटर ऊँचा जीव हूँ। मेरी चोंच हलके पीले रंग की होती है और गर्दन व पेट सफेद! मेरे सिर पर एक काली टोपी और सीने पर मोटा काला पट्टा होता है। मेरा शरीर भूरा होता है। पंख काले भूरे और सफेद बिंदुदार होते हैं। हाँ, मेरे पैर जरूर पीले होते हैं और पंजे पीछे से सपाट होते हैं। मेरा वज़न लगभग पन्द्रह किलो होता है। मादा कद में थोड़ी छोटी तथा वज़न में कम होती है। यदि हम साथ हों तो आप हमें आसानी से पहचान सकते हैं।

मैं सेवण घास से भरे मैदान में रहता हूँ। जैसलमेर में मेरे घर को राष्ट्रीय मरु उद्यान घोषित किया गया है। जिसे नेशनल डेजर्ट पार्क भी कहते हैं। यहाँ हमारा बड़ा परिवार रहता है। मैं शोकलिया, सोरसेन में भी पाया जाता हूँ। किसी ज़माने में मेरे पूर्वज शोलापुर, नलिया तथा रोलापडु में भी रहते थे। वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांत में भी रहता हूँ।

मैं सर्वाहारी प्राणी हूँ। कीट–पतंगे, बिच्छू, मकड़ी, टिड्डी, छिपकली, गिरगिट, छोटे साँप आदि खाना मुझे बहुत पसंद है। मुझे ज्वार, बाजरा, चना, तुअर, मूँगफली

आदि खाना अच्छा लगता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं बिना पानी के भी सेवण घास के मैदानों तथा रेतीले प्रदेशों में कई दिन तक प्यासा रह सकता हूँ।

वर्षा ऋतु के आगमन पर मैं फूला नहीं समाता हूँ। मैं उड़–उड़कर बार–बार 'हूम्...हूम...की आवाज करता हूँ। मादा गोड़ावण को यह आवाज़ बहुत लुभाती है। जब मैं यह आवाज करता हूँ उस समय मेरे गले के नीचे एक थैली अपने आप उभरकर लटक आती है।

स्वभाव से मैं बहुत शर्मीला पक्षी हूँ, पर आलसी नहीं। मैं अपने रहने के लिए घर खुद बनाता हूँ। हम घोंसला नहीं बनाते हैं। सेवण घास में या अन्य ऊँचे सुरक्षित स्थान पर मादा गोड़ावण अण्डा देती है। वह भी एक बार में एक ही अण्डा! इन अंडों को साँप, बिलाव आदि से बचा कर रखना होता है।

कई लोग हमारा शिकार कर लेते हैं। इन दिनों हमारी संख्या में बहुत कमी आ गई है। मैं बहुत चिन्तित हूँ। खुशी की बात यह है कि हमारी सुरक्षा के लिए बहुत लोग आगे आ रहे हैं। सरकार ने भी जंगली जानवरों की रक्षा के लिए कानून बनाया है।

दोस्तो! फिर भी मुझे दुख है कि हमारी संख्या घट रही है। खेती में कीटनाशकों का प्रयोग होने से जहरीला दाना मुझे खाने के लिए मिलता है। पत्थरों की खुदाई के लिए खदानों में होने वाले ब्लास्ट से भी मुझे बहुत डर लगता है। आप ही बताओ मैं क्या करूँ ? मैं भयभीत हूँ।

राजस्थान सरकार ने मुझे 'राज्य पक्षी' का दर्जा दिया है। केंद्र सरकार ने मेरे सम्मान में डाक टिकट जारी किया है।

निर्देश :– शोकलिया अजमेर जिले में हैं और सोरसेन बारां जिले में हैं। कक्षा में राजस्थान के नक्शे में इन जगहों को दिखाएँ शोलापुर महाराष्ट्र में, नलिया गुजरात में तथा रोलापडु आंध्रप्रदेश में हैं। इनकी भारत के नक्शे में पहचान कराएँ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

सर्वाहारी – सभी प्रकार का आहार करने वाला (शाकाहारी व माँसाहारी)

तिलहन – तेलयुक्त फसल (उपज)

दलहन – दालों की फसल (उपज)

लुप्त – गायब, समाप्त

प्रजाति – नस्ल

कगार – किनारा, तट, अन्त

उच्चारण के लिए

मिट्ठू, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, सर्वाहारी, आश्चर्य, टिड्डी

सोचें और बताएँ

1. गोड़ावण की ऊँचाई कितनी है ?
2. सर्वाहारी प्राणी कौन–सा है ?
3. गोड़ावण स्वभाव से कैसा पक्षी है ?
4. मादा गोड़ावण एक बार में कितने अण्डे देती है ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(क) गोड़ावण का शरीर होता है

(अ) काला (ब) भूरा

(स) हरा (द) नीला ( )

(ख)गोड़ावण किस ऋतु के आगमन पर फूला नहीं समाता ?

(अ) शीत (ब) ग्रीष्म

(स) वर्षा (द) तीनों में ( )

2. गोड़ावण को राजस्थान में किसका दर्जा प्राप्त है ?

3. गोड़ावण संरक्षण के लिए कौन–सा पार्क बनाया गया है ?

4. गोड़ावण भयभीत क्यों है ?

भाषा की बात

- इस पाठ में सुन्दर, गर्दन,पंद्रह, महाराष्ट्र शब्द आए हैं। इनमें '' र '' को अलग–अलग तरह से लिखा गया है। उपर्युक्त शब्दों में '' र '' के प्रकार –

शब्द	'' र '' के प्रकार
सुंदर	'' र ''
गर्दन	ॅ
पंद्रह	्र
महाराष्ट्र	^

पाठ में इस प्रकार के और भी शब्द आए हैं। ऐसे '' र '' के विभिन्न रूप वाले शब्द पाठ से ढूंढकर लिखिए ।

मेरा संकलन

गोड़ावण पर केन्द्र सरकार ने एक डाक टिकट जारी किया है। विभिन्न पशु–पक्षियों पर जारी डाक टिकट का संकलन कर उत्तरपुस्तिका में चिपकाएँ।

बहुभाषिकता के शब्द

ब्लास्ट, मीटर, डेजर्ट, नेशनल पार्क

> प्रकृति, समय और धैर्य ये तीनों हर दर्द की दवा है।
> –अज्ञात

केवल पढ़ने के लिए

देश हमारा

सुखद, मनोरम, सबका प्यारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।
नई सुबह ले सूरज आता,
धरती पर सोना बरसाता,
खग–कुल गीत खुशी के गाता,
बहती सुख की अविरल धारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।
बहती है पुरवाई प्यारी,
खिल जाती फूलों की क्यारी,
तितली बनती राजदुलारी,
भ्रमर सिखाते भाईचारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।
हिम के शिखर चमकते रहते
नदियाँ बहती झरने बहते
'चलते रहो' सभी से कहते,
सबकी ही आँखों का तारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।
इसकी प्यारी छटा अपरिमित ,
नये–नये सपने सजते नित ,
सब मिलकर चाहें सबका हित
यह खुशियों का आँगन सारा ।
हरा, भरा यह देश हमारा ।।

मानचित्र पैमाने पर आधारित नहीं है।